महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई

तथा

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड संलग्न...

श्री छत्रपती शिवाजी बहुउद्देशीय ग्रामीण विकास सेवाभावी शिक्षा संस्था, किनगांव द्वारा संचालित...

महात्मा फुले महाविद्यालय, किनगांव

हिंदी विभाग

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/प्रा/डॉ. नवनाथ पुंजाराम काळे

वसंतदादा पाटील महाविद्यालय पाटोदा. जि. बीड

सोमवार तिथि-१८ मार्च, २०२४ को 'हिंदी साहित्य और किसान विमर्श' विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में विशेष अतिथि /सत्राध्यक्ष/शोधालेख प्रस्तोता/प्रतिभागी के रूप में उपस्थित रहकर सक्रिय सहयोग प्रदान किया तथा

हिंदी कविता में किसान का चरित्र'

इस विषय पर शोधालेख प्रस्तुत किया। एतदर्थ यह प्रमाणपत्र दिया जाता है।

डॉ.शीतला प्रसाद दुबे कार्याध्यक्ष महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य आकादमी, मुंबई	डॉ.वीरनाथ हुमनाबादे हिंदी विभाग महात्मा फुले महाविद्यालय, किनगांव	डॉ.बबन आर. बोडके प्राचार्य तथा हिंदी विभागाध्यक्ष महात्मा फुले महाविद्यालय, किनगांव

Scanned with OKEN Scanner

Also available at : flipkart amazon

Vanya

₹850/-
ISBN 978-93-90052-63-9

rudra graphics

हिंदी साहित्य और भारतीय किसान ■ डॉ. बबनराव बोडके

Vanya

हिंदी साहित्य
र भारतीय किसान

डॉ. बबनराव बोडके

अस्वीकरण

वान्या पब्लिकेशंस, कानपुर द्वारा प्रकाशित लेखों/शोध पत्रों में व्यक्त विचार योगदानकर्ताओं के अपने हैं। ये आवश्यक रूप से संपादक/प्रकाशक के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करते हैं। संपादक/प्रकाशक इन लेखों/शोध पत्रों की सामग्री/पाठ से उत्पन्न किसी भी दायित्व के लिए किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं है।

ISBN 978-93-90052-63-9

मूल्य : आठ सौ पचास रुपये मात्र

पुस्तक	:	**हिंदी साहित्य और भारतीय किसान**
संपादक	:	**प्रो. (डॉ.) बबनराव बोडके**
©	:	संपादक
प्रकाशक	:	**वान्या पब्लिकेशंस**
		1A/2122 आवास विकास हंसपुरम्, नौबस्ता,
		कानपुर - 208 021
		Email : vanyapublicationskanpur@gmail.com
		info@vanyapublications.com
		Website : www.vanyapublications.com
		Mob. : 9450889601, 7309038401
संस्करण	:	2024
मूल्य	:	850/-
शब्द-सज्जा	:	रुद्र ग्राफिक्स, हनुमन्त विहार, नौबस्ता, कानपुर
आवरण	:	गौरव शुक्ल, कानपुर
मुद्रण	:	सार्थक प्रिंटर्स, नौबस्ता, कानपुर

दो शब्द...

'हिंदी साहित्य और किसान विमर्श' विषय पर आयोजित एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के सुअवसर पर विद्वजन, अध्यापक एवं शोध छात्रों ने अपने चिंतनशील प्रतिभा के माध्यम से जो सृजनशील शोधालेख पुस्तक प्रकाशन हतु प्राप्त हुए हैं, उन आलेखों का पठण करने के बाद मेरे मानसपटल पर स्वतंत्रता पूर्व काल से लेकर आज तक भारतीय किसानों का चित्र छा गया। आद्य समाज सुधारक महामानव महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा मराठी में लिखित 'शेतकऱ्याचा आसूड' (१८८६) उसका आगे चलकर हिंदी में अनुवाद 'किसान का कोड़ा' पुस्तक की याद आयी उस पुस्तक में महात्मा ज्योतिबा फुले ने तत्कालिन भारतीय किसानों की अवस्था का अत्यंत दाहक और भयावह यथार्थ से रूबरू किया। उसी समय किसान की पशु से भी गई बीती अवस्था, उनकी आकाश को भी छूनेवाली समस्या को उन्होंने चित्रित किया है और उस समय अंग्रेज सरकार से किसानो की स्थिति सुधारने के लिए गुहार लगाई थी। उस परंपरा को आगे बढाने का कार्य हिंदी साहित्य सम्राट मुंशी प्रेमचंद जी ने किया है। प्राप्त आलेखों में से ज्यादातर आलेख प्रेमचंद के साहित्य को लेकर लिखे गए हैं। प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास 'गोदान' का नायक किसान 'होरी' वर्तमान स्थितियों में भी प्रासंगिक है।

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य की ओर दृष्टि डाले तो दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, मजदूर विमर्श, बाल विमर्श, किन्नर विमर्श, अल्पसंख्यक विमर्श, आदिवासी विमर्श, किसान विमर्श आदि विभिन्न प्रकार के विमर्श पर चिंतन हो रहा है। साथ ही साथ हिंदी साहित्य के विविध विधाओं में विविध विमर्शों पर मंथन हो रहा है। विशेषतः राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों के माध्यम से गहन एवं चिंतनशील विमर्श हो रहा है। प्रसिद्ध समीक्षक डॉ. हूबनाथ पांडेय जी ने अपने आलेख में किसानों के प्रति कहा है 'कभी किसानों को संस्कृति का शेषनाग कहा जाता था। हजारों बरस पहले पूरी दुनिया में कृषि की शुरुआत महिलाओं ने की। समस्त पर्व उत्सव त्यौहार कृषि से ही उपजे 'वसुदैव कुटुंबकम्' कृषि का सूत्र वाक्य था। आज भी किसान और किसानी इस सूक्त की अभिव्यक्ति है। लेकिन दुर्भाग्य की बात है जो किसान दिन रात जीतोड़ मेहनत कर दुनिया का पेट भरता है वही आज भूखा नंगा और बर्बरता का जीवन जी रहा है, जो समीक्षाजगत से भी उपेक्षित। इसलिए प्रस्तुत संगोष्ठी का विषय किसान विमर्श है।

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

1. जो नहीं हो सके पूर्ण काम
मधु कांकरिया 09
2. कृषक मेध यज्ञ
हुबनाथ पांडेय 24
3. किसान जीवन का यथार्थ
कमलेश सिंह नेगी 26
4. हिंदी उपन्यासों में व्यक्त कृषक जीवन
प्रो. रणजीत जाधव 31
5. प्रेमचंद के कहानियों में किसानी जीवन
काजू कुमारी साव 37
6. भारतीय किसान के त्रासद जीवन की यथार्थ अभिव्यक्ति 'गोदान'
डॉ. शेषराव राठोड 46
7. आधुनिक हिंदी कविता : किसान संस्कृति का चित्रण
डॉ. अरुण प्रसाद रजक 52
8. बाजार आबाद और किसान बर्बाद की दास्तान 'ढलती साँझ का सूरज'
डॉ. मनोहर भंडारे 59
9. कवि नांदेडी की कविताओं में किसान विमर्श
प्रो. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद 63
10. किसान और किसानी व्यवस्था की व्यथा
डॉ. विश्वनाथ किशन भालेराव 68
11. बीसवी सदी के अंतिम दशक के उपन्यासों में किसान विमर्श
डॉ. जाधव ज्ञानेश्वर भाउसाहेब 73
12. समकालीन साहित्य में किसान विमर्श
डॉ. दिपक विनायक पवार 79
13. किसान विमर्श के परिप्रेक्ष्य में हिंदी कविता
डॉ. अमर आनंद आलदे 85
14. नागार्जुन की कविता में किसान विमर्श
डॉ. गंगाधर बालन्ना उषमवार 91
15. प्रेमचंद की कहानियों में चित्रित किसान संघर्ष
डॉ. रूपाली दळवी–ओहोळ 96
16. केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में किसान जीवन का यथार्थ
डॉ. साईनाथ तुकाराम उमाटे 99
17. भारतीय किसानों / मजदूरों के प्रतिबद्ध लेखक : फणीश्वरनाथ रेणु (क्षेत्र गद्य के संदर्भ में)
डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे 103
18. किसान जीवन के कुशल चितेरे जनकवि 'नागार्जुन'
प्रो. संजय संपतराव जाधव 109
19. हिंदी कविता में किसान का चित्रण
डॉ. न.पु. काळे 120
20. आधुनिक हिंदी कविता और किसान विमर्श
डॉ. दिलीप गुंजरगे 126
21. किसान विमर्श के परिप्रेक्ष्य में समकालीन हिंदी कविता
प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण 130
22. 'गोदान' : कृषक पीड़ा का दस्तावेज़
डॉ. कल्याण पाटील 138
23. प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में किसान विमर्श
प्रा. डॉ. शेख आर. वाय. 144
24. केदारनाथ अग्रवाल की कविता
शोधार्थी– गुलाबराव शामराव सोनोने 150
25. 'हत्या' कहानी में किसान जीवन संघर्ष की अभिव्यक्ति
डॉ. पुरभाजी माणिकराव भुमरे 155
26. प्रेमचंद के साहित्य में अभिव्यक्त किसान जीवन
प्रो. संगीता श. उप्पे 161
27. 'हत्या' कहानी में 'किसान की आत्महत्या नहीं, हत्या!'
डॉ. सुनील गुलाबसिंग जाधव 168
28. कृषक कवि : केदारनाथ अग्रवाल
डॉ. महावीर सुरेशचंद उदगीरकर 173
29. 'फाँस' उपन्यास में किसानी वेदना
प्रो. बबन रंभाजीराव बोडके 177
30. प्रेमचन्द की कहानी और किसान विमर्श
डॉ. संगीता पांडुरंग लोमटे 181
31. भारतीय किसान की दशा और दिशाएँ
डॉ. बनिता बाबुराव कुलकर्णी 184
32. प्रेमचन्द का गोदान और भारतीय किसान
प्रो. किशोर बळीराम लोहकरे 190

Scanned with OKEN Scanner

19

हिंदी कविता में किसान का चित्रण

डॉ. न.पु. काळे

शोध सारांश :

आज साहित्य में सामजिक,राजनितिक,धार्मिक आदि कई विमर्शो पर चर्चा हो रही है। भारतीय समाज एवं राजनितिक व्यवस्था में किसानों को देश अन्नदाता के रूप में महिमामंडित किया जाता है लेकिन उसे अपना जीवन कई यातनाओ में बिताना पड़ता है। राजनितिक,प्रशाशन द्वारा किसानों के हक़ के लिए कई योजनाओ को पारित तो किया जाता है लेकिन वास्तविक रूप से क्या वह सारी योजनाओं का लाभ सामान्य किसानों को मिलता है? बढ़ते शहर, विस्तृत होती निजी कंपनियां, विस्तारित होते रास्ते आदि कई योजनाओ के नाम पर किसानो की खेती बाड़ी हथिया ली जाती है। भले ही उसे उसका सरकारी दाम मिलता हो लेकिन सामान्य किसानों की अवस्था 'ना घर का ना घाट का' हो जाती है। पूंजीवाद का बढ़ता वर्चस्व,बाजारवाद, साहुकारो की बढ़ती नफाखोरी तथा प्राकृतिक विपदाओ के कारण सामान्य किसानों का जीवन काफी यातनामय हो गया है। भारतीय किसानों के प्रति हिंदी कविता में संवेदनशीलता दिखाई देती है। हिंदी के कई कवियोने किसानों की त्रासदी को अपनी रचनाओ में वाणी दी है।

प्रस्तावना :

साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है। समाज की विभिन्न गतिविधियों का चित्रण साहित्य की विविध विधाओं में किया जाता हैं। साहित्य का उद्देश केवल मनोरंजन करना नहीं है बल्कि समाज के वास्तविक रूप को समाज के सामने रखकर यथार्थ का आईना दिखाने का दायित्व भी साहित्यकार का हैं। भारतीय किसान को परिधि में रखकर हिंदी साहित्य के उपन्यास, कहानी, नाटक ,कविता आदी विधाओ में किसान का जीवन,उसके जीवन की त्रासदी, संघर्ष, पीड़ा, शोषण को उजागर किया गया है।

आज भारतवर्ष में हमने तरक्की के कई सोपानों को प्राप्त किया है लेकिन किसानों के जिन्दगी में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने में हमें असफलता ही मिली है। आज भी सरकारे केवल किसानों के हितों की बाते चुनावी माहोल में करती हैं और

बाद में उसे चुनावी जुमला करार देकर किसानों के सपनों के साथ धोकाधड़ी करती हैं। किसानों के हित में कई तरह की बड़ी बड़ी बातें अवश्य होती है लेकिन उसकी दुर्दशा का कोई अन्त नहीं है ! हिंदी कविता में किसानी परिवेश, किसानों की त्रासदी का चित्रण किया गया है। मैथिलीशरणगुप्त, धूमिल, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, ओमप्रकाश वाल्मीकि आदि कवियों ने अपनी काव्य रचना के माध्यम से किसानों का यथार्थरूप से चित्रण किया है।

विषय प्रवेश

हिंदी कविता में महानगरीय जीवन का चित्रण किया गया है क्योंकी ज्यादातर कवि महानगरीय परिवेश से जुड़े थे। बाद में यह चित्र बदलता हुआ हमें दिखाई देता है, महानगरीय जीवन की त्रासदी, सर्वहारा, मजदूरों के शोषण के साथ ही गाँव, देहाती परिवेश के किसानों की व्यथाओ को भी हिंदी कविता के माध्यम से वाणी मिली। हिंदी कविता में किसानों के प्रति संवेदनशिलता की भावना धूमिल की कविता में दृष्टिगोचर होती दिखाई देती है। धूमिल को 'देहाती संस्कार का कवि' के रूप में पहचाना जाता है। गाँव, क़स्बा ,मिट्टी, खेत, किसानों का चित्रण धूमिल की कविता में किया गया है। उनकी कविता का केन्द्रबिंदु आम आदमी रहा है। इसीकारण धूमिल की कविता में गाँव, खलिहान, बैल, मिट्टी, गोबर जैसे कई शब्दों का एवं किसान के जीवन का चित्रण दिखाई देता है। धूमिल की कविता किसानों की जिन्दगी से जुडी हुई है। गाँव देहात, कृषको की भाषा, वहां के मुहावरों का प्रयोग कवि ने किया है। किसानों का शोषण देखकर उन्हें दुःख होता है। किसानों के प्रति उनकी आत्मीयता स्पष्टरूप से दिखी देती है उनके शब्दों में "सारे किसान खेती–बरी बंद कर दे। जब फसल नहीं होगी तब इन सारे शहरातियो को पता चलेगा की, गाँव क्या होता है उनकी अपनी बिसात क्या है?" सामान्य लोगों को न्याय आसानी से कब मिलता है ? एक तो व्यवस्था उसका शोषण करती है और फिर अपने हक़ के लिए उसे कोर्ट कचहरी के कई चक्कर काटने पड़ते है फिर भी उसे न्याय मिलेगा इसकी कोई ग्यारंटी नहीं है। अपनी न्याय व्यवस्था की कार्य पद्धति की आलोचना करते हुए वें लिखते हैं–

"गाँव की सरहद
पार करके कुछ लोग
बगल में बस्ता दबाकर कचहरी जाते है
और न्याय के नाम पर
पुरे परिवार की बर्बादी उठा लाते है।"

सामान्य कृषको का शोषण व्यवस्था सरेआम करती है। इसीकारण किसानों को अपने गले में फांसी का फंदा लगाना पड़ता है। देश का अन्नदाता भले ही किसान को कहा जाता हो लेकिन उसका बुरा हाल है और व्यापारी, पूंजीपति

Scanned with OKEN Scanner

मजे में है। यह किसानों का दुर्भाग्य 'हरित क्रांति' नामक कविता में इस प्रकार दर्शाया गया हैं–

"लोहे की छोटी सी दुकान में
बैठा हुआ आदमी सोना
और इतने बड़े खेत में खड़ा आदमी
मिट्टी क्यों हो गया है।"

आजादी के पच्चहत्तर साल बाद भी सर्वहारा आदमी तथा किसानों के हालात में कोई इजाफा नहीं हुआ है। किसानों के जीवन का स्तर उपर उठने में सफलता नहीं मिल रही है इसकी वजह को ढूँढना आवश्यक है। बाजारवाद, पूंजीवाद, राजनैतिक व्यवस्था किसानों का शोषण कर रही है परिणाम स्वरुप उन्हें आर्थिक विपन्नता मिलती है। इसीकारण छोटी सी दुकान में बैठा हुआ आदमी याने व्यापारी,पूंजीपति मजे में है,खुशहाल है और इतने बड़े खेत में खड़ा आदमी मिट्टी हो जाता है! यह कैसी विडंबना है। इस दुर्दशा के कारण भारतीय किसानों को आत्महत्या का कदम उठाना पड़ता है। एक ओर देश के भौतीक विकास का ग्राफ बढ़ रहा है।ाथ ही किसानों की दुर्दशा एवं आत्महत्या का ग्राफ भी बढ़ता दिखाई देता है। इसे गंभीरता से देखना आवश्यक है! सामाजिक,पारिवारिक, जिम्मेदारियों को प्राकृतिक आपदाओ का सामना करते हुए किसान समय के पूर्व ही वयस्क हो जाते है धूमिल लिखते हैं–

"इतनी हरयाली के बावजूद
अर्जुन को नहीं मालूम उसके गले की हड्डी
क्यों
उभर आयी है
उसके बाल सफ़ेद क्यों हो गए हैं।"

ओमप्रकश वल्मिकि इनकी 'ठाकुर का कुआ' यह किसानी परिवेश की दुर्दशा को अधोरेखित करनेवाली महत्वपूर्ण कविता है। वाल्मीकि का दलित साहित्य में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान रहा है। किसान भी तो दलित,पीड़ित है ही! 'ठाकुर का कुआ' इस कविता में वें लिखते हैं–

"चूल्हा मिट्टी का
मिट्टी तालाब की
तालाब ठाकुर का।
भूख रोटी की
रोटी बाजरे की
बाजरा खेत का
खेत ठाकुर का।

बैल ठाकुर का
हल ठाकुर का
हल की मुठ पर हथेली अपनी
फसल ठाकुर की।
–फिर अपना क्या?"

सर्वहारा,दलित,पीड़ित,कृषकों का क्या है ? यह जो सवाल वाल्मीकि जी उठाते है वह बहूत महत्वपूर्ण है। 'ठाकुर का कुआ' यह कविता भले ही दलित विमर्श को उद्घाटित करती हो उसमे भारतीय किसानों की दुर्दशा को भी यथार्थ रूप से उजागर किया गया है।

कवि 'नागार्जुन' इन्होने भी अपनी कविता में किसानों का चित्रण करके कृषक परिवार के दुःख को व्यक्त किया है। 'अकाल और उसके बाद' यह कविता किसानों के हालात को सिमित शब्दों में सार्थकता के साथ वयां करती है–

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।"

किसानों के जीवन की त्रासदी एवं संघर्ष सर्वत्र दिखाई देता है। दिन–रात खेत में खपने के बाद भी दो वक्त की रोटी भी उसे नसीब नहीं होती, उसकी थाली हमेशा खाली ही रहती है। कवि नागार्जुन लिखते हैं–

"खाली नहीं ट्राम,खाली नहीं ट्रेन,
खाली नहीं माईड, खाली नहीं ब्रेन
खाली है हाथ, खाली है पेट
खाली है थाली,खाली है प्लेट !"

किसानों को देश का अन्नदाता कहा जाता है लेकिन विडंवना देखिए कैसी है,उसकी थाली ही खाली है ! उसकी थाली क्यों खाली है ? इसका जवाब यह व्यवस्था देगी ? यह सवाल निर्माण होता हैप् युगधारा इस काव्य कृति में नागार्जुन इन्होने किसानों के दुःख दर्द को अभिव्यक्त किया है।

राष्ट्रकवि के रूप में 'मैथिलीशरण गुप्त' इन्हें पहचाना जाता है उनकी कविता में भी किसानों के प्रति गहरी संवेदनशीलता दिखाई देती है। किसानों का शोषण, दुर्दशा का चित्रण करते हुए वे लिखते है–

"हो जाये अच्छी भी फसल,पर लाभ कृषको को कहाँ
खाते, खवाई, बीज, ऋण से है रंगे रखे जहाँ
आता महाजन के यहाँ वह अन्न सारा अंत में
अधपेट खाकर फिर उन्हें है कांपना हेमंत में।"

Scanned with OKEN Scanner

धुप, वारिश, जाड़ा चाहे जो भो हो किसान को हर मौसम में खेत में श्रम करना पड़ता है। किसान अपनी पूरी जिन्दगी फसल तैयार करने में बिताता है और अंत में उसके हाथ में कुछ भी नहीं रहता है। साहूकार के घर अनाज से भर जाते है और देश के अन्नदाता को ही भूके पेट रहना पड़ता है!

किसानों की दुरावस्था का चित्रण 'दिनकरजी' इनकी कविता में भी दिखाई देता है। भारतीय किसानों को आराम कहाँ मिलता है,उसे अपना जीवन खेत में ,बैलो के साथ श्रम करते हुए विताना पड़ता है। 'दिनकर जी' के शब्दों में –

"जेठ हो कि हो पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है,
छाते कभी संग बैलों का , ऐसा कोई याम नहीं है।
मुख में जीभ, शक्ति भुज में, जीवन में सुख का नाम नहीं है,
वरान कहाँ ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है।"

'मिथिलेश श्रीवास्तव' की किसान की व्यथा को व्यक्त करनेवाली 'चित्ते भर' महत्वपूर्ण रचना है।

आपसी रंजिश,कोर्ट कचहरी एवं आर्थिक दुर्दशा का चित्रण 'मिथिलेश श्रीवास्तव' इस प्रकार करते है –

"एक का बैल बिक जाता है
दुसरे का बैल पागल हो जाता है
एक की जमीन बिक चुकी है
पहले ही
दुसरे की जमीन की बोली है आज।"

निष्कर्ष :

हिंदी साहित्य में विविध विधाओ के साथ ही कविताओं में भी किसान के जीवन, त्रासदी, संघर्ष का चित्रण किया गया है। कृषक वर्ग के प्रति कविओ की संवेदना दिखाई देती है।

किसानों को देश का अन्नदाता कहा जाता है लेकिन उसे हि खालीपेट रहना पड़ता है। कई तरह की विडंबनाओ को कविता में सार्थकता के साथ अभिव्यक्त किया है। राजनितिक षडयंत्र का शिकार अक्सर किसान होता है। कागजो पर योजनाओ को तैयार किया जाता तो है लेकिन वह वास्तविक रूप में उसका कितने किसानों को लाभ मिलता है यह एक स्वतंत्र अनुसन्धान का विषय है। आज देश के प्रधानमंत्री चुनावी दौर में भले ही 'मोदी की गारंटी' का नारा लगाते हो लेकिन किसानों को अपने हक के लिए उनके ही शोषण व्यवस्था में लढना पड़ रहा है। दिल्ली में अपने हक के लिए किसानों को आने पर पावंदी क्यों लगाई जा रही है। अनशन में,विविध आंदोलनों में सरकार किसानों को रोक क्यों लगाती है ? उनपर लाठीचार्ज क्यों हो रहा है ? किसानों पर वंदूके क्यों तानी,

कई किसानों को अपनी जान क्यों गवानी पड़ी। इसके किए व्यवस्था ही जिम्मेदार है! सदियों से किसानों पर अन्याय होता आ रहा है। पूंजीपतिओ के वढ़ते कदम, महानगरीय विस्तार,निजी कम्पनियों का विस्तार,नफाखोरी,आय से ज्यादा होने वाला खर्चा,राजनितिक व्यवस्था, प्रशाशनिक उदासीनता,साहूकारों द्वारा होनेवाला शोषण तथा आनेवाली विपदाओ का संकट, कोर्ट कचहरी के चक्कर आदि का सामना किसानों को करना पड़ता है। परिणाम स्वरुप आज के किसानों की दुर्दशा सर्वत्र दिखाई देती है। इन विपदाओ का सामना करते–करते किसानों को अपनी जमीन भी बेचनी पड़ती है और उसे मजदूरी करनी पड रही है। इस कृषक वर्ग के दुःख,दर्द का, जीवन संघर्ष का चित्रण हिंदी कविता में किया गया है। किसानों के प्रति कविता में संवेदनशिलता सर्वत्र दिखाई देती है।

संदर्भ

– आलोचना, सं. नामवर सिंह (अप्रेल–जून), पृ.क्र 17
– कल सुनना मुझे, धूमिल, पृ.क्र 105
– युगधारा, नागार्जुन,यात्री प्रकाशन,दिल्ली, षष्ठम संस्करण–2008 पृ.क्र 104
https%@@hindi&kavita-com@HindiHunkarDinkar-php

सहा.प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
वसंतदादा पाटील महाविद्यालय,पाटोदा (महा)
Email : dr.napukale@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner